

# ईश्वर का अभय संकेत

संजय मोहन मित्तल

अभयं नः करत्यन्तरिक्षमभयं द्यावापृथिवी उभे इमे ।

अभयं पश्चादभयं पुरस्तादुत्तरादधरादभयं नो अस्तु ॥ अथर्व १९:१५:५

अभयं मित्रादभयममित्रादभयं ज्ञातादभयं परोक्षात् ।

अभयं नक्तमभयं दिवा नः सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु ॥ अथर्व १९:१५:६

अथर्ववेद के दो प्रसिद्ध मंत्रों में परम् पिता परमेश्वर ने हमें अभय रहने का मार्ग सुझाया है। यह मंत्र कह रहे हैं कि हम भयमुक्त हो जाएँ। किसी भी अवस्था में हमें कोई भय न लगे। तीनो लोको (पृथिवी, अन्य ग्रह नक्षत्र आदि व उनके बीच का स्थान) में और तीनो लोको से हमें कोई भय न हो। किसी दिशा से भी हमें कोई भय न हो। जो मित्र हैं और जो अभी मित्र नहीं हैं, उनसे भी कोई भय न हो। हमें जो ज्ञात है और जो अभी प्रत्यक्ष नहीं है, उससे भी कोई भय न हो। अन्धकार अथवा उजाले की अवस्था में भी कोई भय न हो। ध्यान देने योग्य बात है, [स] मंत्र में मित्र और अमित्र का प्रयोग। मित्र से भय उस स्थिति में हो सकता है जब वह आपका कोई ऐसा रहस्य जानता हो जिसके उजागर होने पर आपको हानि हो या लज्जा का सामना करना पड़े। [स] मंत्र में मित्र का विपरीत कोई शत्रु सूचक शब्द नहीं है, मात्र अमित्र ही कह दिया गया है। अर्थात् [स] जगत में किसी को भी शत्रु की दृष्टि से न देखें। हर कोई या तो मित्र है अथवा मित्र बनना शेष है।

भावार्थ में यह मन्त्र कह रहे हैं कि हम [त]ने निडर हो जाएँ कि कोई भी कर्म करते हुये हमें भय का आभास भी न हो। वाणी से निडर हो कर बोलें। मुख से निःसंकोच भोजन ग्रहण करें। नासिका से स्वच्छन्द श्वास लें। आँखों से बिना भय के देखें। कानों से बिना भय के सुनें। हाथों से बिना भय के कर्म करें। और पैरों से बिना भय के गन्तव्य पर जाएँ।

परन्तु [त]ना भयमुक्त कोई होगा कैसे? [स]की कुंजी या कहें तो संसार में सारे सुखों की कुंजी [न]ही मन्त्रों में ही है। मन्त्रों के अन्त में लिखा है "सर्वा आशा मम मित्रं भवन्तु", जीवन की सब दिशाएँ, सब पहलू मेरे मित्र हो जाएँ। सब मित्र हो तो फिर भय कैसा! परन्तु सब मित्र बनेंगे कैसे? मित्रता तो सदा दोतरफा होती है। सबसे मित्रता की अपेक्षा करने से पहले मुझे स्वयं उनसे मित्रवत् व्यवहार करना पड़ेगा। मित्रता का पहला नियम है कि मित्र मित्र को हानि नहीं पहुँचाता, सदैव मित्र के लाभ की ही सोचता है। जब मैं स्वार्थ भाव से उपर उठ, सबको अपना मित्र मान, अपने सभी कर्म सर्वहितकारी यज्ञ की भावना से करूँगा तो मेरा अन्तःकरण मुझे कर्म करने से नहीं रोकेगा और मैं भयमुक्त हो जाऊँगा।